प्रश्न: स्विट्जरलैंड की राजनीतिक प्रणाली की अनूठी विशेषताओं का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर:

प्रस्तावना

समकालीन तुलनात्मक राजनीति के परिप्रेक्ष्य में स्विट्जरलैंड की शासन प्रणाली एक विशिष्ट संवैधानिक प्रतिमान प्रस्तुत करती है। जहाँ विश्व के अधिकांश लोकतांत्रिक राष्ट्र शक्ति के संकेंद्रण अथवा प्रतिनिध्यात्मक ढांचे की सीमाओं से आबद्ध हैं, वहीं स्विट्जरलैंड ने 'प्रत्यक्ष लोकतंत्र' और 'बहुल कार्यपालिका' के समन्वय से एक स्थिर और समावेशी राजनैतिक संस्कृति विकसित की है। राजनीति विज्ञान के प्रख्यात मनीषी **लॉर्ड ब्राइस** ने इस राष्ट्र को **"लोकतंत्र की सर्वोत्तम प्रयोगशाला"** की संज्ञा देते हुए इसकी प्रासंगिकता को वैश्विक स्तर पर रेखांकित किया है।

1. प्रत्यक्ष लोकतंत्र:

स्विट्जरलैंड की शासन व्यवस्था का केंद्रबिंदु वहां का प्रत्यक्ष लोकतंत्र है, जो नागरिकों को केवल मताधिकार तक सीमित नहीं रखता, बल्कि नीति-निर्धारण में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करता है।

- **लोकनिर्णय (Referendum):** यह व्यवस्था संसद की विधायी शक्ति पर जनता के अंकुश का कार्य करती है। संघीय संसद द्वारा निर्मित किसी भी अधिनियम को जन-मतदान के माध्यम से निरस्त करने का अधिकार जनता के पास सुरक्षित है।
- **आरंभक (Initiative):** यह सकारात्मक शक्ति का प्रतीक है, जहाँ नागरिक स्वयं संविधान संशोधन अथवा नवीन विधि के निर्माण हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकते हैं। लॉर्ड ब्राइस का यह तर्क अत्यंत सटीक प्रतीत होता है कि स्विस संस्थाएँ लोकतंत्र को उस धरातल पर ले जाती हैं जहाँ वह केवल एक सैद्धांतिक दर्शन न रहकर एक व्यावहारिक जीवन-पद्धति बन जाता है।

2. बहुल कार्यपालिका:

स्विस कार्यपालिका, जिसे 'संघीय परिषद' (Federal Council) कहा जाता है, विश्व की सर्वाधिक अनूठी शासन संरचना है। यहाँ सात सदस्यों की एक समिति सामूहिक रूप से राष्ट्राध्यक्ष और शासनाध्यक्ष की भूमिका निभाती है।

- **ए.वी. डायसी** ने इस व्यवस्था का विश्लेषण करते हुए इसे **"व्यावसायिक प्रबंधकों की**

एक कार्यकुशल समिति" के रूप में वर्णित किया है। यहाँ सत्ता का कोई एकल केंद्र (जैसे प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति) नहीं होता, जिससे तानाशाही की संभावना स्वतः समाप्त हो जाती है।

- राष्ट्रपति का पद केवल औपचारिक है और सात सदस्यों के मध्य वार्षिक आधार पर चक्रानुक्रम (Rotation) में परिवर्तित होता रहता है, जो समानता के सिद्धांत को सुदृढ़ करता है।

3. स्थायी तटस्थता और संघीय स्वायत्तता

स्विट्जरलैंड की विदेश नीति का मूल मंत्र उसकी 'स्थायी तटस्थता' है। **हंस कोह्न** के मतानुसार, यह तटस्थता केवल एक कूटनीतिक नीति नहीं, बल्कि उनके राष्ट्रीय अस्तित्व और आंतरिक अखंडता की रक्षा का आधार है। इसी प्रकार, यहाँ का संघवाद (Federalism) राज्यों यानी 'कैंटनों' को ऐसी व्यापक स्वायत्तता प्रदान करता है जो विश्व के अन्य संघों में दुर्लभ है। कैंटनों की अपनी पृथक नागरिकता और संविधान उनकी विशिष्ट पहचान को अक्षुण्ण रखते हैं।

आलोचनात्मक विमर्श (Critical Discourse)

यद्यपि स्विस प्रणाली स्थिरता और जन-भागीदारी का आदर्श प्रस्तुत करती है, किंतु राजनीतिक विश्लेषण के दृष्टिकोण से इसमें कुछ अंतर्निहित सीमाएं दृष्टिगोचर होती हैं:

1. **निर्णय प्रक्रिया में विलंब और जटिलता:** प्रत्यक्ष लोकतंत्र की प्रक्रियाएँ अत्यंत समयसाध्य हैं। बार-बार होने वाले लोकनिर्णय के कारण तात्कालिक राष्ट्रीय संकटों के समय त्वरित निर्णय लेना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
2. **मतदाता शिथिलता (Voter Apathy):** राजनीति विज्ञान के आधुनिक शोधों से संकेत मिलते हैं कि निरंतर मतदान की विवशता नागरिकों में एक प्रकार की मानसिक उदासीनता उत्पन्न कर रही है, जिससे सक्रिय भागीदारी के प्रतिशत में गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई है।
3. **रूढ़िवादिता और प्रगतिशील विधियों में बाधा:** जैसा कि **सिगमंड न्यूमैन** ने इंगित किया है, प्रत्यक्ष लोकतंत्र कभी-कभी लोक-लुभावनवाद का शिकार हो जाता है। महिलाओं को मताधिकार प्रदान करने में हुई ऐतिहासिक देरी यह सिद्ध करती है कि जन-इच्छा सदैव प्रगतिशील नहीं होती।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचना के आलोक में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि स्विट्जरलैंड की राजनीतिक प्रणाली **"सहमति मूलक लोकतंत्र" (Consensus Democracy)** का एक

उत्कृष्ट उदाहरण है। यह व्यवस्था **हर्बर्ट मॉरिसन** की उस स्थापना को पुष्ट करती है कि बहुलवादी समाज में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए सत्ता का विकेंद्रीकरण और संस्थागत समन्वय अनिवार्य है। यद्यपि इसकी गति मंद हो सकती है, किंतु इसकी वैधानिकता और जन-स्वीकार्यता इसे विश्व की सर्वाधिक सुदृढ़ राजनीतिक प्रणालियों में परिगणित करती है।